Toppersnotes®
Unleash the topper in you

BPSC

TRE 4.0

हिन्दी - (कक्षा 6-8)

भाग - 3

हिन्दी भाषा

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	हिंदी भाषा और उसका विकास	1
2	हिन्दी साहित्य का परिचय एवं विकास	30
3	वर्णमाला	43
4	संज्ञा	47
5	सर्वनाम	49
6	विशेषण	51
7	क्रिया	54
8	लिंग	57
9	वचन	62
10	वाक्य एवं वाक्य प्रकार	65
11	वाक्य रचना	70
12	विराम चिन्ह	74
13	वर्तनी शुद्धि	77
14	काल	82
15	कारक	86
16	वाच्य	89
17	संधि	91
18	समास	103
19	उपसर्ग	113
20	प्रत्यय	117
21	रस	122
22	छंद	129
23	अलंकार	133

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	मुहावरे	137
25	लोकोक्तियाँ	145
26	तत्सम व तद्भव शब्द	152
27	अव्यय एवं अविकारी शब्द	157
28	शब्द युग्म	161
29	शब्द शक्ति	169
30	विलोम शब्द	175
31	पर्यायवाची शब्द	181
32	वाक्य के एक शब्द	186
33	पारिभाषिक शब्दावली	194
34	अपठित गद्यांश	206
35	अपठित पद्यांश	211
36	संक्षेपण	214
37	हिन्दी लेखकों का सामान्य परिचय एवं रचनाएँ	216

1
CHAPTER

हिंदी भाषा और उसका विकास

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ

- विश्व की भाषाओं की संख्या को लेकर विद्वान विभक्त हैं। सामान्यतः इनकी संख्या 2796 से 3000 के बीच मानी जाती हैं।
- संसार की सभी भाषाओं का अध्ययन दो प्रकार के वर्गीकरण के तहत् किया जाता हैं :–
  1. आकृतिमूलक वर्गीकरण
  2. पारिवारिक वर्गीकरण
- विश्व में भाषा परिवारों की संख्या को लेकर विभिन्न मत हैं :–
  - भोलनाथ विरी और फॉन हुम्बोल्ट ने भाषा परिवारों की संख्या 13 मानी हैं। वहीं फ्रिडीश म्यूलर ने इनकी संख्या 100 मानी हैं।
  - निर्विवादित रूप से चार भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत 18 भाषा परिवारों को महत्व दिया गया हैं।
    1. यूरेशिया (यूरोप–एशिया)
    2. अफ्रीका भूखण्ड
    3. प्रशांत महासागरीय भूखण्ड
    4. अमेरिका भूखण्ड

भारोपीय परिवार

- भारोपीय परिवार के अन्य नाम हैं – इण्डो जर्मेनिक, भारत–हिती परिवार, आर्य–परिवार
- ध्वनिक आधार पर भारोपीय परिवार की 10 शाखाओं को 'शतम्' व 'केन्तुम' दो भागों में बाँटा गया हैं।
- भारत – ईरानी के तीन वर्गों का उल्लेख ग्रियर्सन ने किया हैं :–
  1. ईरानी
  2. दरद
  3. भारतीय आर्यभाषा

भारतीय आर्य भाषा के चरण

1. प्राचीन आर्यभाषा (2000 ई. पू. – 500 ई. पू.) →
   - वैदिक संस्कृत – 2000 – 1000 ई.पू.
   - लौकिक संस्कृत –1000 – 500 ई.पू.
2. मध्यकालीन आर्यभाषा (500 ई.पू.– 1000 ई.) →
   - पालि – 500 ई.पू. – 1 ई.
   - प्राकृत – 1 ई. – 500 ई.
   - अपभ्रंश तथा अवहट्‌ट – 500 ई. – 1000 ई.

प्राकृत में भाषाएँ –

(i) शौरसेनी (ii) पैशाची (iii) महाराष्ट्री (iv) अर्धमागधी
(v) मागधी (vi) केकप (vii) टक्वु (viii) श्वास
(ix) ब्राचड़

3. आधुनिक आर्यभाषा – (1000 ई. – अब तक) – हिन्दी, बांग्ला, उड़िया, मराठी, गुजराती, पंजाबी, सिंधी।

पालि :– मध्यकालीन आर्यभाषा की प्रथम अवस्था

- 'पल्लि' से पालि शब्द की व्युत्पत्ति हुई। पल्लि का अर्थ हैं ग्राम। इस प्रकार पालि का अर्थ होता हैं ग्रामीण भाषा।
- पालि शब्द की उत्पत्ति 'पाटलिपुत्र' से भी मानी जाती हैं जिसका अर्थ 'मगध की भाषा'।
- पालि शब्द का सम्बन्ध पंक्तियों से माना गया हैं। बुद्ध वचनों में जो पक्तियाँ प्रयुक्त की गई हैं उन्हें पालि कहा जाता हैं।
- कुछ विद्वान पालि को बौद्ध साहित्य को पालने वाली या रक्षा करने वाली भाषा मानते हैं।

बौद्ध धर्म से संबंधित ये तीनों महत्वपूर्ण ग्रंथ पालि में है :–

1. सुत पिटक
2. विनय पिटक
3. अभिधम्म पिटक

- विसुद्धिमग्ग को बौद्ध सिद्धान्तों का कोश भी कहते हैं, इसे सुसन्धिकप्प और कच्चान गंध भी कहा जाता हैं, यह पालि का सर्वश्रेष्ठ व्याकरण माना जाता हैं।

पालि की विशेषताएँ

- कच्चायन के अनुसार पालि में 41 ध्वनियाँ हैं जिनमें 8 स्वर तथा 33 व्यंजन हैं।
- मांगुलान के अनुसार पालि में ध्वनियों की संख्या 43 हैं जिनमें 10 स्वर तथा 33 व्यंजन हैं।
- संयुक्त व्यंजनों में भी अत्यधिक परिवर्तन हुए क्योंकि संस्कृत की जटिलता का एक बड़ा कारण यही हैं, सरलीकरण के प्रयासों में संयुक्त व्यंजनों का रूप परिवर्तन होना स्वाभाविक ही था।
- पालि में संस्कृत के नपुंसक लिंग तथा द्विवचन का भी लोप था।

शब्दकोशीय प्रवृत्तियाँ

- पालि की शब्द संपद का मूल – आधार स्वाभाविक रूप से तद्भव शब्द हैं।
- स्थानीय व देशज शब्दों का विकास तेजी से हुआ। यथा– धण (स्त्री), बप्प (पिता)

प्राकृत भाषा

- प्राकृत भाषा का चरण 1 ई. से 500 ई. माना जाता हैं।
- प्राकृत के विकास की अवस्थाओं को किशोरी दास वाजपेयी आदि वैयाकरणों ने तीन चरणों में बाँट कर देखा हैं –
    - **प्रथम प्राकृत –** प्राकृत एक जनभाषा रही हैं। जो प्राचीन प्रचलित जनभाषा हैं।
    - **द्वितीय प्राकृत –** कुछ विद्वान ऐसा मानते हैं कि संस्कृत भाषा के सरलीकरण के कारण प्राकृत भाषा बनी। इसे 'साहित्यिक प्राकृत' भी कहते हैं।
    - **तृतीय प्राकृत –** प्राकृत के बाद की भाषा अपभ्रंश को कुछ विद्वान तृतीय प्राकृत भी कहते हैं।
        - प्रथम अवस्था – पालि
        - द्वितीय अवस्था – प्राकृत
        - तृतीय अवस्था – अपभ्रंश

प्राकृत की विशेषताएँ :–

- प्राकृत की ध्वनि संरचना पालि के समान ही हैं।
- पालि में 'य' व्यंजन का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में होता था, जबकि प्राकृत में प्रायः 'य' के स्थान पर 'ज' प्रयुक्त होने लगा (यश > जस)
- क्षतिपूरक दीर्घीकरण संस्कृत से हिन्दी के विकास में सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया हैं। प्राकृत का योगदान यह हैं कि उसी स्थिति में यह प्रक्रिया दिखाई देने लगी।

महत्वपूर्ण तथ्य

1. वाग्भट्ट और आचार्य हेमचन्द ने अपभ्रंश को ग्राम भाषा कहा है।
2. दण्डी ने अपभ्रंश को आर्भीरदि की भाषा कहा है।

अपभ्रंश :– मध्यकालीन आर्यभाषा की तीसरी अवस्था

- अपभ्रंश मध्यकालीन और आधुनिक आर्य – भाषाओं के बीच की कड़ी हैं।
- अपभ्रंश को अवहंस, ग्रामीण भाषा, देशी भाषा, आभीरी, आभीरोक्ति आदि भाषाओं से जाना जाता हैं।
- वाक्यपदीयम् में भर्तृहरि ने बताया कि सर्वप्रथम व्यादि ने संस्कृत के मानक शब्दों से भिन्न 'संस्कार च्युत' भ्रष्ट और अशुद्ध शब्दों को अपभ्रंष कहा हैं। व्यादि का ग्रंथ लक्षश्लोकात्मक संग्रह अनुपलब्ध हैं।
- डॉ. उदयनारायण तिवारी व भोलानाथ तिवारी के अनुसार अपभ्रंश शब्द का भाषा के अर्थ में प्रयोग सर्वप्रथम चण्ड ने अपने ग्रन्थ प्राकृत लक्षण में किया।
- धनपाल द्वारा रचित 'भविस्यत कहा' अपभ्रंश का प्रथम प्रबंध काव्य हैं। डॉ. याकोबी ने इसका सम्पादन किया था।

- उदयनारायण तिवारी की पुस्तक का नाम (हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास)
  नागर – गुजरात की बोली
  उपनागर – राजस्थान की बोली
  ब्राचड़ – सिंध की बोली
- डॉ. हरदेव बाहरी ने 7वीं शती से 11वीं शती तक के समय को अपभ्रंश का स्वर्ण काल कहा हैं।

अवहट्ठ :–

- अवहट्ठ भाषा का समय 900 ई. से 1100 ई. तक निश्चित किया गया हैं।
- सुनीति कुमारी चटर्जी के अनुसार अवहट्ठ भाषा अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के बीच की कड़ी मानी जाती हैं। अवहट्ठ भाषा का प्रयोग संदेशरासक के रचयिता अब्दुर रहमाम ने किया।
- अवहट्ठ शब्द का प्रथम प्रयोग वर्षारत्नाकर में मिलता हैं।
- विधापति ने 'कीर्तिलता' की भाषा को अवहट्ठ कहा हैं।

पुरानी/प्रारंभिक हिन्दी

- चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने परवर्ती अपभ्रंश को ही पुरानी हिन्दी कहा हैं।
- शुद्ध खड़ी बोली के प्रारम्भिक नमूने खुसरों की शायरी में प्राप्त होते हैं।
- हरदेव बाहरी ने लिखा ''अतः हम डॉ. माता प्रसाद गुप्त और कैलाशचन्द्र भाटिया के विचार से सहमत हैं कि रोड़ा कवि कृत राउलवेल एकमात्र ऐसी कृति हैं जिसमें एक भाषा के लक्षण मिलते हैं।''
- अवधी खड़ी बोली और दक्खिनी, किसी का भी एक भाषी ग्रंथ 1250 ई. से पहले उपलब्ध नहीं हैं और यहीं तीन भाषाएँ हैं जिनकी परम्परा आगे चली हैं।
- सर्वप्रथम 1850 ई. में आधुनिक आर्यभाषाओं का वर्गीकरण हार्नले ने किया :–
  1. पूर्वी गोड़ियन – पूर्वी हिन्दी, बंग्ला, असमी, उडिया
  2. पश्चिमी गोडियन – राजस्थानी, गुजराती, सिन्धी
  3. उत्तरी गोड़ियन – गढ़वाली, नेपाली, पहाड़ी
  4. दक्षिणी गोडियन – मराठी
- हार्नले ने मध्य देश तथा केन्द्र के आर्य को भीतरी आर्य और चारों और फेले आर्य को बाहरी आर्य कहा।

जॉर्ज ग्रियर्सन का 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' में प्रदत्त वर्गीकरण

बाहरी उपशाखा

- उत्तरी पश्चिमी समुदाय – (i) लहँदा (ii) सिंधी
- दक्षिणी समुदाय – मराठी
- पूर्वी समुदाय – (i) उड़िया (ii) बिहारी (iii) बंगला (iv) असमिया

मध्य उपशाखा

- मध्यवर्ती समुदाय – पूर्वी हिंदी

भीतरी उपशाखा

- केन्द्रीय समुदाय – (i) पश्चिमी हिंदी (ii) पंजाबी (iii) भीरनी (iv) राजस्थानी (v) खानदेशी (vi) गुजराती
- पहाड़ी समुदाय – (i) पूर्वी पहाड़ी (नेपाली) (ii) मध्य पहाड़ी केन्द्रीय पहाड़ी (iii) पश्चिमी पहाड़ी

- डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने ध्वनि व व्याकरण को आधार बनाकर ग्रियर्सन के वर्गीकरण की आलोचना की हैं और अपना वर्गीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया हैं –
  - उदीच्य – सिंधी, लहदॉ, पंजाबी
  - प्रतीच्य – राजस्थानी, गुजराती
  - मध्यदेशीय – पश्चिमी हिन्दी
  - प्राच्य – पूर्वी हिन्दी, बिहारी, असमिया, बंगला, उडिया
  - दक्षिणात्य – मराठी

भोलानाथ तिवारी का अपभ्रंश आधारित वर्गीकरण

अपभ्रंश	आधुनिक निर्मित भाषाएँ
ब्राचड़–पैशाची (पश्चिमोत्तरी)	लहँदा, पंजाबी, सिंधी, पश्चिमी हिंदी
शौरसेनी (मध्यवर्ती)	राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती
अर्धमागधी (मध्यपूर्वीय)	पूर्वी हिंदी
मागधी (पूर्वीय)	बिहारी, बंगाली, उड़िया, असमिया
महाराष्ट्री (दक्षिणी)	मराठी

हरदेव बाहरी का वर्गीकरण	
हिंदी वर्ग	मध्य पहाड़ी, राजस्थानी, पश्चिमी हिंदी, पूर्वी हिंदी, बिहारी हिंदी
हिंदीतर	उत्तरी–नेपाली
(अ–हिंदी) वर्ग	पश्चिमी – पंजाबी, सिंधी, गुजराती दक्षिणी – सिंहली, मराठी पूर्वी – उड़िया, बंगला, असमिया

- हिन्दी की प्रमुख बोलियों के नामकरणकर्ताः–

बोली	**नामकरणकर्ता**
कौरवी	राहुल सांकृत्यायन
राजस्थानी (भाषा)	ग्रियर्सन
डिंगल	बांकीदास
ब्रजबुलि	ईश्वरचन्द्र गुप्त
बिहारी	ग्रियर्सन
भोजपुरी	रेमण्ड
मैथिली	कोलब्रुक

'राजस्थानी हिन्दी' उपभाषा :–

- यह राजस्थान, मालवा जनपद और सिंध के कुछ क्षेत्रों तक फैली हैं जिसे 4 करोड़ के करीब लोग बोलते हैं।
- राजस्थानी हिन्दी उपभाषा 'ट' वर्ग बहुला उपभाषा हैं। मराठी में प्रयुक्त 'ठ' ध्वनि भी इसमें प्रयुक्त होती हैं।
- इसमें पुल्लिंग एकवचन शब्द प्रायः ओकारान्त होते हैं।
- पुल्लिंग व स्त्रीलिंग शब्दों के बहुवचन में अंत में 'ऑ' का प्रयोग होता हैं।
- राजस्थानी हिन्दी भाषा के अंतर्गत 4 बोलियाँ आती हैं –
  1. मारवाड़ी
  2. मेवाती
  3. मालवी
  4. जयपुरी – जयपुर बोली को ढुढ़ाड़ी भी कहते है।

'बिहारी हिन्दी' उपभाषा :–

- इस उपभाषा में तीन प्रमुख बोलियाँ आती हैं –
- भोजपुरी, मगही और मैथिली
- बिहारी हिन्दी उपभाषा की सबसे अधिक बोले जाने वाली बोली भोजपुरी हैं।
- बिहारी हिंदी उपवर्ग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण बोली हैं।
- लोक प्रचलन की दृष्टि से यह हिन्दी की सबसे बड़ी बोली हैं।
- भारत के बाहर मॉरीशस, फिजी आदि देशो में यह अत्यधिक प्रचलित हैं।
- भिखारी ठाकुर को भोजपुरी का 'शेक्सपियर' कहा जाता हैं। उन्होंनें 'बिदेसिया' सहित बारह नाटकों की रचना की हैं।

'पहाड़ी हिन्दी' उपभाषा :–

- पहाड़ी हिंदी उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों मुख्यतः कुमाऊँ तथा गढ़वाल (नेपाल) में बोली जाती हैं।
- 'पहाड़ी हिन्दी' पर आर्यभाषा संस्कृत, तिब्बती चीनी तथा खस का भी प्रभाव रहा हैं। इसकी साहित्यक परम्परा नहीं मिलती हैं।
- पश्चिमी पहाडी को नेपाली कहते है।
- इस उपवर्ग की बोलियों में सानुनासिक स्वरों की प्रधानता हैं।
- इसकी बोलियाँ प्रायः ओकारांत हैं, यथा – घोड़ो कालो, चल्यों आदि।
- 'पहाड़ी' हिन्दी' के अंतर्गत दो बोलियाँ आती हैं – कुमाऊँनी और गढ़वाली।

'पूर्वी हिन्दी' उपभाषा

- पूर्वी हिन्दी का क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ तक फैला हुआ हैं।
- प्राचीन समय में जिस क्षेत्र को उत्तरी कोसल तथा दक्षिण कोसल कहा जाता था, वही क्षेत्र पूर्वी हिन्दी का क्षेत्र हैं ।
- इसकी सीमाओं का निर्धारण कानपुर से मिर्जापुर तथा लखीमपुर से बस्तर तक किया जाता हैं ।
- 'पूर्वी हिन्दी' के अन्तर्गत तीन बोलियॉं हैं – अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी ।

ToppersNotes
Unleash the topper in you

'पश्चिमी हिन्दी' उपभाषा

- 'पश्चिमी हिन्दी' हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा उप वर्ग हैं। जिसका क्षेत्र अंबाला से कानपुर तक तथा देहरादून से महाराष्ट्र के आरम्भ तक विकसित हैं। इसकी बोलियाँ निम्नलिखित हैं –

ब्रजभाषा

- ब्रज का अर्थ है– पशुओं या गायों का समूह या चरागाह। पशुपालन की अधिकता के कारण यह क्षेत्र ब्रज कहलाया और इसकी बोली ब्रजभाषा।
- ब्रज या ब्रजी एक बोली होने पर भी मध्ययुग में हिंदी प्रदेश से बाहर पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र आदि क्षेत्रों में इसका प्रयोग हुआ और साहित्य रचा जाता रहा, इस कारण भाषा शब्द ब्रज के साथ जुड़ गया और ब्रजभाषा शब्द बना।
- इस बोली का आरंभिक रूप आदिकालीन साहित्य में पिंगल तथा मध्यकाल में भाखा नाम से मिलता है।
- भूक्सा, अंतर्वेदी, भरतपुरी, डांगी, माथुरी आदि ब्रजभाषा की मुख्य उपबोलियाँ हैं।
- बंगाली कवि ईश्वरचन्द्र गुप्त ने 'ब्रजबुलि' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया था।
- ब्रजभाषा का विकास तीन कालों में विभाजित किया गया है।
- आरंभ से 1525 ई. तक आदिकाल, 1525 से 1800 ई. तक मध्यकाल और 1800 ई. से अब तक 'आधुनिक काल' खड़ी बोली।
- खड़ी बोली का दूसरा नाम कौरवी है। 'कौरवी' का प्रयोग राहुल सांकृत्यायन ने किया था।
- बीम्स, सुनीति कुमार चटर्जी, धीरेंद्र वर्मा आदि भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार खड़ी बोली का आधार कौरवी है।
- खड़ी बोली मानक हिंदी का आधार कोलबुक ने कन्नौजी को माना, इस्टाविक तथा मुहम्मद हुसैन ने ब्रजभाषा को माना और मसऊद हसन खाँ ने हरियाणी को माना है।

विद्वानों के अनुसार खड़ी बोली का अर्थ

विद्वान	खड़ी बोली का अर्थ
सुनीति कुमार चटर्जी कामताप्रसाद गुरु गिलक्राइस्ट किशोरीदास वाजपेयी अन्य भाषा वैज्ञानिक	'सीधी' 'कर्कश' गँवारू खड़ी 'पाई' से संबंधित खरी या शुद्ध

- वर्तमान हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तानी और दक्खिनी कुछ सीमा तक खड़ी बोली पर आधारित हैं।

बुंदेली

- बुंदेली बुंदेल खंड की बोली है। बुंदेलखंड नाम बुंदेला राजपूतों के आधिपत्य के कारण पड़ा।
- भू–भाग की व्यापकता की दृष्टि से बुंदेली पश्चिमी हिंदी की सबसे व्यापक बोली है।
- बुंदेली में लोक साहित्य पर्याप्त मात्रा में है। 'ईशुरी के फाग' बहुत प्रसिद्ध है।
- आल्हा एक प्रसिद्ध लोकगाथा है, जिसे बुंदेली की ही एक उपबोली 'बनाफरी' में लिखा गया था।
- धीरेंद्र वर्मा मानते हैं कि बुंदेली, कन्नौजी के समान ही ब्रज की एक उपबोली है।
- इसके उच्चारण में अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति मिलती है, जैसे– आधा > आदा, दूध > दूद आदि।
- वर्तमान हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तानी और दक्खिनी कुछ सीमा तक खड़ी बोली पर आधारित हैं।

कन्नौजी

- कन्नौजी शब्द संस्कृत के कान्यकुब्ज शब्द से विकसित हुआ है। (कान्यकुब्ज → कण्णउज्ज → कन्नौज)
- कुछ विद्वान कन्नौजी को ब्रजभाषा का ही रूप मानते हैं। ग्रियर्सन ने इसे अलग बोली माना है।
- कन्नौज जनपद का पुराना नाम पांचाल था।
- इस बोली में मध्यम ह का लोप हो जाता है, जैसे– जाहि झ जाइ, करहु > करउ आदि।
- हिंदी की अंतिम महाप्राण ध्वनि का यहाँ अल्पप्राणीकरण हो जाता है, जैसे– हाथ > हाँत आदि।
- कन्नौजी में अनुनासिकीकरण की प्रवृत्ति अत्यधिक मात्रा में मिलती है, जैसे– बात > बाँत आदि।

हरियाणी (हरियाणवी)

- इसका मूल संबंध हरियाणा राज्य से है। ग्रियर्सन ने इसे बांगरु कहा।
- धीरेंद्र वर्मा ने हरियाणी को स्वतंत्र बोली नहीं माना और खड़ी बोली का ही एक रूप माना है।
- हरियाणी को जाटू भी कहते हैं।
- हरियाणी में श्लोक साहित्य पर्याप्त मात्रा में है।

दक्खिनी

- दक्खिनी हिंदी के अन्य नाम है– दकनी, देहलवी, हिन्दवी, गूजरी।
- हैदराबाद में दक्खिनी हिंदी का एक विशिष्ट रूप प्रचलित है जिसे हैदराबादी हिंदी कहा जाता है।
- गूजरी इसका वह रूप है जो गुजरात के कवियों के साहित्य में प्रयुक्त है, यथा– मुहम्मद शाह कादिरी के काव्य में।
- दक्खिनी हिंदी के प्रमुख स्थान आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक व मद्रास हैं।
- दक्खिनी हिंदी की मुख्य उपबोलियाँ हैं– गुलबर्गी, बीदरी, बीजापुरी, हैदराबादी।

दक्खिनी हिंदी की विशेषताएँ

- खड़ी बोली के सभी स्वर दक्खिनी हिंदी में मिलते हैं।
- खड़ी बोली के सभी व्यंजन इसमें भी मिलते हैं। इनके अतिरिक्त, 'ग' तथा 'फ' जैसी ध्वनियाँ अत्यधिक मात्रा में दिखाई देती हैं।
- ड़ के स्थान पर ड प्रयोग करने की प्रवृत्ति मिलती है, जैसे– पड़ा > पडा आदि।
- महाप्राण ध्वनियों का अल्पप्राणीकरण काफी ध्वनियों में दिखाई देता है, जैसे– मूरख > मूरक, मुझे > मुजे, धोखा >धोका आदि
- कहीं–कहीं अल्पप्राण ध्वनियों का महाप्राणीकरण भी होता है। उदाहरण के लिये– पलक> पलख, पहचान > पछान आदि।
- एक शब्द की विभिन्न ध्वनियों के विपर्यय की प्रवृत्ति दक्खिनी की एक प्रमुख विशेषता है। उदाहरण के लिये लखनऊ > नखलऊ, कीचड़ > चीकड़, मतलब > मतबल आदि।
- सर्वनाम व्यवस्था इस प्रकार है, उत्तम पुरुष– मेरे., हमन, मंज, मुज मध्यम पुरुष– तुज, तुमें, आपहिं अन्य पुरुष– उनन, उनने अन्य सर्वनाम– जित्ता, जित्ती, उत्ता, उत्ती।
- क्रिया व्यवस्था के प्रमुख प्रयोग इस प्रकार हैं वर्तमानकाल– अहे, है, हैं, हूँ, हैगा भूतकाल– कह्या, बोल्या, था, थ्या भविष्यकाल– होगा, होंगे, होंगी, चलसी, चलासुं।
- भूतकाल की क्रियाओं में यकर प्रत्यय का प्रयोग भी काफी मात्रा में होता है, जैसे– आकर > आयकर, रोकर >रोयकर आदि।
- दक्खिनी हिंदी में आरंभिक काल में खड़ी बोली की शब्दावली ही सर्वाधिक प्रचलित रही। इसमें फारसीकरण की प्रवृत्ति बढ़ती गई। इसके अतिरिक्त, मराठी, तेलुगू और कन्नड़ के स्थानीय शब्द भी सीमित मात्रा में शामिल होते गए।

हिंदुस्तानी

- हिंदुस्तानी शब्द दो शब्दों के मेल से बना है– हिंदुस्तान + ई।
- धीरेन्द्र वर्मा, ग्रियर्सन आदि विद्वानों का मत है कि यह नाम अंग्रेजों ने दिया है।
- तुजुक–ए–बाबरी में भाषा के अर्थ में हिंदुस्तानी शब्द का प्रयोग हुआ है। प्रारंभ में यह शब्द हिंदी या हिंदवी का समानार्थी था, किंतु आगे चलकर इसका वह अर्थ हो गया जो आज उर्दू का है।
- हिंदुस्तानी में तद्भव तथा बहुप्रचलित संस्कृत तत्सम और अरबी–फारसी के वे शब्द होते हैं, जो बोलचाल में भी प्रयुक्त होते हैं।

खड़ी बोली, ब्रजभाषा तथा अवधी की तुलना

अंतर का आधार		खड़ी बोली	ब्रजभाषा	अवधी
उद्भव		शौरसेनी अपभ्रंश के उत्तरी रूप से	शौरसेनी अपभ्रंश से	अर्धमागधी अपभ्रंश से
उपभाषा वर्ग		पश्चिमी हिंदी का प्रतिनिधि रूप	पश्चिमी हिंदी से संबद्ध पर अवधी से अत्यन्त निकटता	पूर्वी हिंदी उपभाषा का प्रतिनिधि रूप
भौगोलिक विस्तार		मेरठ केन्द्र है। दिल्ली से देहरादून तक तथा अम्बाला से हिमाचल के प्रारंभ तक का संपूर्ण क्षेत्र।	ब्रजमंडल का संपूर्ण क्षेत्र। मूलतः मथुरा, वृंदावन, आगरा में प्रयुक्त। हरियाणा का भी कुछ भाग, जैसे– पलवल, होडल इत्यादि।	लखनऊ, फैजाबाद, अयोध्या, सीतापुर
साहित्यिक विकास		19वीं सदी से पूर्व विशेष नहीं– सिद्ध, नाथ, खुसरो, रहीम, संत काव्य, दक्खिनी हिंदी में आरंभिक रूप; 19वीं सदी से तीव्र आरंभ–	आदिकाल में 'पिंगल' की परंपरा में उपस्थित– प्राकृत पैंगलम, उक्तिव्यक्तिप्रकरण, पृथ्वीराज . रासो में आरंभिक रूप नाथ साहित्य व खुसरो की कविताओं में भी द्रष्टव्य। सूरदास रीतिकाल → अखिल भारतीय साहित्यिक	सुल्तानपुर, रायबरेली तथा आसपास का क्षेत्र
ध्वनि व्यवस्था	उच्चारण की प्रवृत्ति	आकारांतता (चला, गया)	ओकारांतता (चलो, गयो)	उकारांतता (चलु. कहतु)
	ऐ, औ का उच्चारण	ए, ओ की तरह (औरत > ओरत)	सामान्य रूप में (आवै, जावों)	संध्यक्षरों के रूप में (चउड़ा, आवइ)
	प्रारंभिक स्वर	लुप्त होते हैं (इकट्ठा > कट्ठा) (सियाना झ स्याणा)	सामान्य रूप में	
		सामान्य रूप में		
	ध्वनियों का परिवर्तन	नझ ण (मानस > माणस) ल ळ (बालक > बाळक)		
व्याकरण	संज्ञा	संज्ञा का एक रूप (प्रायः आकारांत)	संज्ञा का एक ही रूप।	संज्ञा लरिका–लरिकवा–लरिकउना नदी–नदिय–नदीवा
	सर्वनाम उत्तम पुरुष	एकवचन बहुवचन	एकवचन बहुवचन	एकवचन बहुवचन

ToppersNotes
Unleash the topper in you

	मध्यम पुरुष **अन्य पुरुष** **अनिश्चयवाचक**	मैं, मुज, में म्हारा, हमारा तू, तैं, तम तम, थारा, तारा वो, वू, उस्का वे, उन्का, उन्की कोण, कूण, किस्का	मैं, हौं, मोहिं, मेरौ हम, हमन, हमारौ तू. तू. तोहि, तेरौ, तिहारो तुम, तुम्हें, तुम्हारो, वौ, वह, वाकी, ताहि वे, वै, उन, उनको कैसो, कौन	में, मह, मो हम, हमहिं, हमार तू, तँ. तोर तुम, तुम्हे, तुम्हार, तुहार वह, ऊ, ओकर वेह, ओनकर, ओनका कवन, कउन, कइसो
	लिंग व्यवस्था	स्त्रीलिंग के लिये ई, अन, नी प्रत्यय प्रमुख– शेर > शेरनी, माली > मालन, जाट > जाटनी, अहीर > अहीरन	स्त्रीलिंग के लिये ई, इया, आइन तथा आनी प्रत्यय– गोरी, ललाइन, देवरानी, अखियाँ / बिटिया। कहीं–कहीं नपुंसकलिंग का प्रयोग भी, जैसे– सोना > सोनो।	प्रायः इया परसर्ग (बिटिया) ई, इनि, इनी, अनी, नी परसर्ग भी (बकरी, बाघिनि, साधिनी, महारानी, चोरनी)
	वचन व्यवस्था	पुल्लिंग ब.व. में ए प्रत्यय – बेटा > बेटे; स्त्रीलिंग ब.व. में याँ, एँ प्रत्यय, रोटी > रोटियाँ, किताब > किताबें	एँ, अन, इन प्रत्ययों का प्रयोग किताब > किताबें, किताबन, रोटी > रोटिन	एँ, न तथा न्हि प्रत्ययों का प्रयोग ए → बात > बातें, न → लरिका > लरिकन, न्ह, न्हि– सबन्हि, जुवतिन्ह
व्याकरण			**क्रिया व्यवस्था**	
	वर्तमान काल	ऊ रूप → जाऊँ हूँ; व रूप → जावै है!	त रूप → करत, उठत, जात	त रूप → करत, बैठत
	भूतकाल	या रूप → चल्या, गया, कर्‌या	औ रूप → कियौ, उठौ; न रूप लीना. दिनी	स रूप → कीन्हेसि; व रूप – आवा, जावा
	भविष्यकाल	गा रूप (द्वित्वीकृत) जाऊंग्गा	ग रूप में करैगो; ह रूप → करिहैं, मरिहैं	ब रूप → जाब, चलब; ह रूप → करहिं, चलहिं
	सहायक क्रियाएँ	वर्तमान → ह, स → है, सै। भूत → या → होया भविष्य → गा → होवगा	वर्तमान– हु रूप (हैं / हौं); भूतकाल – तु रूप (हुतौ, हुती) भविष्य– ग (होवैगो)	वर्तमान → ह – हओं, आहि भूतकाल → भ → भएउ, भए, भइल भविष्य → ब – होब, होबउ
	संज्ञार्थ क्रियाएँ	ण रूप – जाण, करण	न रूप – चलन, खेलन	बो, इबो – जाइबो
			कारक व्यवस्था	
	विभक्ति / परसर्ग	होते हैं	होते हैं	कहीं–कहीं नहीं होते, जैसे– राम दरस मिटि गई कलुषाई
	कर्ता	ने, नै, णे	केवल भूतकालिक सकर्मक क्रिया में ने, नै	कोई परसर्ग / विभक्ति नहीं

Toppersnotes
Unleash the topper in you

	कर्म	को, ने.	कु, कूँ, को	का, के, कूँ, कः
	संबंध	का, के, की, रा, रे, री	प्रायः का, के, को, कभी–कभी केर, केरा	केर, केरा, केरे अत्यधिक प्रयुक्तः कहीं–कहीं का, के, की
	विशेषण व्यवस्था	आकारांत विशेषण विकारी हैं (छोटा > छोटी, छोटे) अन्य विशेषण अविकारी बने रहते हैं, विशेषतः स्त्रीलिंग बहुवचन में पूर्णतः अविकारी रहते हैं, जैसे– मोटी लड़की > मोटी लड़कियाँ (मोटियाँ लड़कियाँ नहीं)	विशेषण विशेष्यानुसार विकारी होते हैं, जैसे– कालो छोरो > काली छोरी, काले छोरे	विशेषण प्रायः अविकारी बने रहते हैं, जैसे– छोट लरकवा, छोट बिटिया

प्रमुख आधुनिक आर्यभाषाओं की विशेषताएँ	
लहँदा	• अन्य नाम– हिंदकी, जटकी, मुल्तानी, चिभाली, पोठवारी • लिपि– लण्डा (शारदा लिपि की एक उपशाखा) • लहँदा का शाब्दिक अर्थ 'पश्चिमी' होता है।
पंजाबी	• इसकी लिपि लण्डा थी जिसमें सुधार कर गुरु अंगद ने गुरुमुखी लिपि बनाई। • मुख्य बोलियाँ– माझी, डोगरी, दोआबी, राठी आदि।
सिंधी	• यह सिंधु नदी के दोनों किनारों पर बोली जाती है। • इसकी अपनी लिपि 'लण्डा' है, लेकिन यह गुरुमुखी और फारसी में भी लिखी जाती है। • बोलियाँ– विचोली, लासी, सिराइकी, थरेली, लाड़ी।
गुजराती	• इसकी लिपि गुजराती के नाम से ही जानी जाती है। गुजराती कैथी से मिलती–जुलती लिपि में लिखी जाती है। इसमें शिरोरेखा नहीं होता है।
मराठी	• बोलियाँ– कोंकणी, नागपुरी, कोष्टी, माहारी। • लिपि देवनागरी है किंतु कुछ लोग मोड़ी लिपि का प्रयोग करते हैं।
असमी	• मुख्य बोली विष्णुप्रिया और लिपि बांग्ला है।
बांग्ला	• बांग्ला प्राचीन देवनागरी से विकसित लिपि है जिसे बांग्ला में लिखी जाती है।
उडिया	• उड़िया प्राचीन उत्कल तथा ओड़िसा की भाषा है। • उड़िया की लिपि ब्राह्मी की उत्तरी शैली से विकसित लिपि है। • प्रमुख बोलियाँ– गंजामी, सम्भलपुरी, भत्री आदि।

हिंदी की उपभाषाएँ तथा बोलियाँ				
अपभ्रंश	**उपभाषा**	**बोली**	**क्षेत्र**	
	राजस्थानी हिंदी ट वर्ग बहुला,	मारवाड़ी	जोधपुर, अजमेर, मेवाड़, सिरोही, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, चूरू, नागौर, पाली, जालौर, बाड़मेर, पाकिस्तान के सिंध प्रांत के पूर्वी भाग में	
		मालवी	उज्जैन, इंदौर, देवास, रतलाम, भोपाल, होशंगाबाद, प्रतापगढ़, गुना, नीमच, टोंक	
		मेवाती	अलवर, गुरूग्राम, भरतपुर	
		जयपुरी / ढूंढ़ाड़ी	हाड़ौती, कोटा, बूँदी, बारां, झालावाड़	
	पहाड़ी हिंदी	कुमाउँनी	नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़	
		गढ़वाली	गढ़वाल, टिहरी, चमोली, उत्तरकाशी के आसपास के क्षेत्र	
	पश्चिमी हिंदी	ओकार बहुला,	ब्रजभाषा	उत्तर प्रदेश – मथुरा, आगरा, अलीगढ़, मैनपुरी, एटा, बदायूँ. बरेली मध्य प्रदेश –ग्वालियर का पश्चिमी भाग। राजस्थान – भरतपुर, करौली, धौलपुर, जयपुर का पूर्वी भाग
			कन्नौजी	फर्रूखाबाद, कानपुर, हरदोई, पीलीभीत, इटावा, शाहजहाँपुर
			बुंदेली	झाँसी, जालौन, हमीरपुर, बाँदा, छत्तरपुर, सागर, ग्वालियर, भोपाल, ओरछा, नरसिंहपुर, सिवनी, होशंगाबाद
		आकार बहुला,	कौरवी / खड़ी बोली	रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, सहारनपुर, देहरादून, अम्बाला, मुजफ्फरनगर, पटियाला के पूर्वी भाग
			हरियाणवी	दिल्ली, कुरुक्षेत्र, करनाल, जींद, हिसार, रोहतक, नाभा, पटियाला
शौरसेनी			दक्खिनी	अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा, बीदर, बरार, मुम्बई
	पूर्वी हिंदी		अवधी	अयोध्या, लखनऊ, लखीमपुर खीरी, बहराइच, गोंडा, सीतापुर, उन्नाव, फैजाबाद, सुल्तानपुर रायबरेली, इलाहाबाद, जौनपुर, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी
			बघेली	मध्य प्रदेश – दमोह, जबलपुर, रीवा, मुंडला, बालाघाट बघेली उत्तर प्रदेश – बाँदा, फतेहपुर, हमीरपुर आदि जिलों के कुछ भागों में
अर्धमागधी			छत्तीसगढ़ी	सरगुजा, बिलासपुर, रायगढ़, दुर्ग, नंदगाँव, काँकेर, रायपुर, खैरागढ़, कोरिया
मागधी	बिहारी हिंदी		भोजपुरी	उत्तर प्रदेश – वाराणसी, गाजीपुर, देवरिया, बलिया, आजमगढ़, महाराजगंज, मऊ,

				चंदौली, संत कबीरनगर, सोनभद्र, कुशीनगर (पडरौना), जौनपुर, मिर्जापुर, बस्ती जिले का पूर्वी भाग बिहार – छपरा, सिवान, गोपालगंज, भोजपुर, भभुआ, रोहतास, सासाराम, मोतिहारी, पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण। झारखंड – राँची, पलामू
			मगही	बिहार – पटना, गया, मुंगेर, जहानाबाद, नालंदा, नवादा, जमुई, शेखपुरा, औरंगाबाद, लखीसराय, भागलपुर झारखंड – पलामू, हजारीबाग
			मैथिली	पूर्वी चंपारण, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, दरभंगा, पूर्णिया, उत्तरी संथाल परगना, माल्दह, दिनाजपुर, तिरहुत सबडिविजन की सीमा के पास नेपाल की तराई में

हिन्दी भाषा की ध्वनि व्यवस्था –

अयोगवाह ध्वनियाँ :–

ये वे ध्वनियाँ हैं, जो न स्वर है। और न ही व्यंजन हैं। ऐसी तीन ध्वनियाँ –

1. अनुस्वार
   अनुस्वार एक नासिक्य ध्वनि है, यह अपने से बाद आने वाले व्यंजन के वर्ग का ही पाँचवां व्यंजन होगा।
2. अनुनासिक
   वह नासिक्य ध्वनि जो स्वर के साथ जोड़कर बोली जाती हैं।
3. विसर्ग
   वह ध्वनि हैं, जो कुछ तत्सम शब्दों में स्वर के बाद 'ह' रूप में उच्चारित होती हैं।

हिन्दी भाषा में शब्द व्यवस्था–

स्त्रोत (उत्पत्ति) की दृष्टि से शब्दों के चार प्रकार हैं –

(i) तत्सम शब्द – जिन्हें संस्कृत से उसी रूप में लिया गया हैं, जैसे वे संस्कृत में मिलते हैं ।

(ii) तद्भव शब्द – जो शब्द कुछ परिवर्तन के साथ हिन्दी में लिए गए हैं ।

(iii) देशज शब्द – वे शब्द जिनका जन्म देश में ही हुआ हैं ।

(iv) विदेशज शब्द – ऐसे शब्द जो सांस्कृति आदान–प्रदान की प्रक्रिया में हिन्दी भाषा में स्वीकार किये गए हैं।

मानक हिन्दी की व्याकरण रचना–

किसी भाषा में निहित व्यवस्था उसके व्याकरण पर निर्भर होती हैं । व्याकरण का अध्ययन चार भागों में किया जाता हैं –

पद संरचना

पद के दो प्रकार – विकारी और विकारी विकारी पदो में शामिल –

1. **संज्ञा** – किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम व्यक्त करने वाला पद।
   संज्ञा के तीन भेद –
   (i) व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (ii) जातिवाचक संज्ञा
   (iii) भाववाचक संज्ञा
2. **सर्वनाम** – संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।
   सर्वनाम के छः भेद
   (i) पुरूषवाचक सर्वनाम :– हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में 3 पुरूष स्वीकार किये गए हैं उत्तम पुरूष, मध्यम पुरूष, व अन्य पुरूष, इन तीनों के लिए हिंदी में निम्नलिखित सर्वनाम प्रचलित हैं।

(ii) निजवाचक सर्वनाम

(iii) निश्चय वाचक सर्वनाम

(iv) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(v) प्रश्नवाचन सर्वनाम

(vi) संबंध वाचक सर्वनाम

3. **विशेषण –** संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाता हैं । विशेषण के 4 भेद होते हैं –
   1. गुणवाचक विशेषण
   2. सार्वनामिक विशेषण
   3. परिणामबोधक विशेषण
   4. संख्यावाचक विशेषण
4. **क्रिया –** जिस शब्द में किसी काम का करना या होना पाया जाता हैं ।

   क्रिया के भेद –
   1. अकर्मक क्रिया
   2. सकर्मक क्रिया

कारक व्यवस्था –

पद संख्या के बाद व्याकरण में कारक व्यवस्था दूसरे स्थान पर हैं।

कारक के भेद –

1. कर्ता कारक
2. कर्म कारक
3. करण कारक
4. सम्प्रदान कारक
5. अपादान कारक
6. संबंध कारक
7. अधिकरण कारक
8. संबोधन कारक

विकारोत्पादक – व्याकरण का तृतीय भाग। विकारोत्पादक के 6 भाग –

- लिंग
- वचन
- काल
- पुरूष
- वाच्य
- भाव

वाक्य सरंचना– व्याकरण का अन्तिम पक्ष, इसके तहत वाक्य निर्माण तथा वाक्यों के भेद पढ़े जाते हैं।

लिपि

- लिखावट/भाषा की सभी ध्वनियों के लिये निर्धारित प्रतीक चिन्हों को लिपी कहते हैं।
- देवनागरी लिपी– हिन्दी भाषा की लिपी देवनागरी हैं।

ध्वनि व्यवस्था

- वर्ण उस मूल ध्वनि को कहा जाता है जिसके खंड नहीं हो सकते।
- कामता प्रसाद गुरु ने वर्णों की संख्या 44 मानी है, जिनमें 11 स्वर तथा 33 व्यंजन सूची है ।

स्वर वर्ण

- जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी अन्य ध्वनि की सहायता के होता है उसे स्वर वर्ण कहते हैं।
- उत्पत्ति के आधार पर स्वर के दो भेद–

मूल स्वर

- जिन स्वरों की उत्पत्ति बिना किसी दूसरे स्वर की होती है, उसे मूल स्वर कहते हैं। (अ, इ, उ, ऋ)

संधि स्वर

- मूल स्वरों के मेल से बनने वाले स्वरों को संधि स्वर कहते हैं। (आ, ई, ऐ, ए, ओ)
- जाति के अनुसार स्वरों के भेद–

सवर्ण स्वर

- एक कही स्थान और प्रयत्न से उत्पन्न स्वर सवर्ण स्वर कहलाते हैं। (अ–आ, इ–ई, उ–ऊ)
- **असवर्ण स्वर–** जिन स्वरों के उच्चारण, स्थान और प्रयत्न समान नहीं होते हैं, उन्हें असवर्ण स्वर कहते हैं। (अ–इ, अ–ऊ, इ–उ)
- उच्चारण के काल मान के अनुसार स्वरों के दो भेद–

लघु स्वर

- जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगता है, लघु स्वर कहलाते हैं। (अ, इ, उ)

गुरु स्वर

- जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है, गुरु स्वर कहलाते हैं। (आ, ई, ऊ)

Unleash the topper in you

व्यंजन वर्ण

- व्यंजन वर्ण वे वर्ण हैं, जिनके उच्चारण में स्वर की सहायता लेनी पड़ती है। हिन्दी में कुल 45 व्यंजन हैं।

प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के भेद

आभ्यंतर प्रयत्न

- ध्वनि उत्पन्न होने के पहले वागिंद्रिय की क्रिया को आभ्यंतर प्रयत्न कहते हैं। (स्पर्श, अंतस्थ तथा ऊष्म या संघर्षी)

स्पर्श व्यंजन

- वे व्यंजन जिनके उच्चारण में जीभ या निचला होंठ उच्चारण स्थान का स्पर्श करके वायु को रोकता है।

अंतस्थ व्यंजन

- वे व्यंजन जिनके उच्चारण स्वर और व्यंजन का मध्यवर्ती होता है। इन व्यंजनों में श्वास का अवरोध बहुत कम होता है।

ऊष्म या संघर्षी

- वे व्यंजन जिनके उच्चारण में विशेष रूप से श्वास का घर्षण होता है। (श, ष, स, ह)
- आभ्यंतर प्रयत्न के आधार पर व्यंजन के ये भेद भी हैं–
  - अर्द्धस्वर– य, व
  - पार्श्विक– ल
  - लुण्डित– र
  - अनुनासिक– ङ, ञ, ण, न, म

बाह्य प्रयत्न

- ध्वनि उत्पन्न होने की अन्त क्रिया को बाह्य प्रयत्न कहते हैं।

अघोष

- जिस वर्ण के उच्चारण में स्वरतंत्री के अधिक कंपन के कारण आवाज भारी हो जाती है। प्रत्येक वर्ण का पहला और दूसरा वर्ण अघोष होता है।

सघोष वर्ण

- वर्ण के उच्चारण में कम कंपन के कारण आवाज अधिक भारी नहीं होती।
- महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में ज्यादा ऊर्जा, श्वास और वायु खर्च होती है। स्पर्श व्यंजनों में प्रत्यके वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण और ऊष्म वर्ण, महाप्राण व्यंजन है।
  1. **अल्प्राण व्यंजन** – उच्चारण में कम ऊर्जा, श्वास और वायु खर्च होती है। प्रत्येक वर्ग का प्रथम, तृतीय, पंचम वर्ण अल्प प्राण होता है।
  2. **महाप्राण** – जिस ध्वनियों में वायु का अधिक प्रयोग किया जाता है महाप्राण कहलाती है प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण महाप्राण होता है।

अयोगवाह ध्वनियाँ

- ये वे ध्वनियाँ हैं जो न स्वर हैं और न ही व्यंजन। ये स्वर इसलिए नहीं है कि इनकी स्वतंत्र गति नहीं है और व्यंजन इसलिए नहीं है कि ये स्वरों के बाद आती है, उनसे पहले नहीं।
  1. अनुस्वार
  2. अनुनासिक
  3. विसर्ग

अनुस्वार

- अनुस्वार एक नासिक्य ध्वनि है। अर्थ है अनु+स्वर। ये नासिक्य ध्वनियाँ स्वर के बाद आती हैं। (गंगा)

अनुनासिक

- वह नासिक्य ध्वनि जो स्वर के साथ जोड़कर बोली जाती है। (बांस, जोंक)

विसर्ग

- यह वह ध्वनि है, जो कुछ तत्सम शब्दों में स्वर के बाद 'ह' रूप में उच्चारित होती है। (दुःख, छः, प्रायः)
- ध्वनियों का वह समूह शब्द कहलाता है जिसका कोई विशेष अर्थ हो।
- हिन्दी की शब्द संपदा का वर्गीकरण विभिन्न आधारों पर किया जा सकता है। कुछ आधार–

1. स्रोत की दृष्टि से
2. निर्माण की दृष्टि से
3. प्रयोग के संदर्भ की दृष्टि से
4. परिवर्तनशीलता की दृष्टि से

स्रोत की दृष्टि से शब्द भंडार

- हिन्दी में उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार प्रकार हैं– तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज।

तत्सम शब्द

- तत्सम शब्द वे शब्द हैं, जिन्हें संस्कृत में उसी रूप में लिए गए हैं, जैसे वे संस्कृत में मिलते थे।

तद्भव शब्द

- तद्भव दो शब्दों के मेल से निर्मित है, जो शब्द संस्कृत के समान नहीं है, लेकिन कुछ परिवर्तन के साथ हिन्दी में लिए गए हैं। (अंधकार से अंधेरा, अष्ट से आठ)

देशज शब्द

- वे शब्द जिनका जन्म देश में ही हुआ हो। देशज शब्द की एक विशेषता यह भी है कि उसमें लोक संस्कृति की महक महसूस की जा सकती है।

विदेशज शब्द

- वे शब्द जो हमारे देश में नहीं उपजे, बल्कि सांस्कृतिक आदान–प्रदान की प्रक्रिया में हिन्दी भाषा में स्वीकार किए गए हैं।
- हालांकि देशज व विदेशज, दोनों ही प्रकार के शब्द दूसरी भाषाओं से संबद्ध होते हैं।

संकर शब्द

- कुछ शब्द दो भाषाओं के मिलने से बनाये जाते हैं, उन्हें संकर शब्द कहा जाता है। (थानेदार, वोटदाल, लाजशरम)

निर्माण की दृष्टि से शब्द के भेद

- निर्माण की दृष्टि से शब्दों के तीन भेद किए गए हैं–

रूढ़ शब्द

- वे शब्द जिनकी ध्वनियों को अलग करके कोई शब्द नहीं निकाला जा सकता या जिनकी व्युपत्ति ज्ञात न हो। (हाथ, पेट, किताब)

यौगिक शब्द

- वे शब्द जो दो या दो से अधिक रूढ़ शब्दों से मिलकर बनते हैं तथा जिनका अर्थ दोनों के अर्थ जुड़ने से निर्धारित होता है। (पुस्तकालय, हाथगोला)

योगरूढ़ शब्द

- ऐसे शब्द जो संरचना की दृष्टि से यौगिक हैं, किन्तु इनका अर्थ एक विशेषज्ञ रूप में रूढ़ हो चुका है।

प्रयोग के संदर्भ की दृष्टि से

- तीन वर्ग है– सामान्य शब्द, पारिभाषिक शब्द, अर्द्ध पारिभाषिक शब्द।

सामान्य शब्द

- सामान्य शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त होता है। सामान्य शब्द निश्चित व वस्तुनिष्ठ अर्थ होना जरूरी नहीं है।

पारिभाषिक शब्द

- पारिभाषिक शब्दों का अर्थ और संदर्भ पूर्णतः परिभाषित रहता है। इन शब्दों का अर्थ एकदम निश्चित और वस्तुनिष्ठ होता है।

अर्द्ध पारिभाषिक शब्द

- वे शब्द जो किसी संदर्भ में पारिभाषिक शब्द बन जाते हैं और किसी संदर्भ में सामान्य शब्दों सा व्यवहार करते हैं। (रस, माँग, बल) रूप के प्रयोग के आधार पर शब्दों के भण्डार दो प्रकार के होते हैं–

विकारी शब्द

- कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनका वाक्य में प्रयोग करने पर रूप बदलता है, विकारी शब्द कहलाते हैं।
- **अविकारी शब्द–** अविकारी शब्दों का रूप किसी भी स्थिति में परिवर्तित नहीं होता है।
- हिन्दी भाषा शब्द निर्माण हेतु चार युक्तियाँ–
  1. उपसर्ग
  2. प्रत्यय
  3. संधि
  4. समास

उपसर्ग

- उपसर्ग उस शब्दांश को कहा जाता है, जो शब्द के पूर्व में जुड़कर उस शब्द के अर्थ को परिवर्तित कर देता है।
- हिन्दी में उपसर्ग प्रायः तीन स्रोतों से आए हैं– उर्दू, फारसी और हिन्दी से ।

प्रत्यय

- प्रत्यय उन शब्दांशों को कहते हैं, जो शब्द के अंत में लगकर शब्द का अर्थ परिवर्तित कर देते हैं।
- संस्कृत प्रत्यय को दो भागों में बाँटा गया है– कृदंत और तद्धित।

कृदंत

- वे प्रत्यय जो किसी क्रिया या धातु के अंत में लगते हैं ।

तद्धित

- वे प्रत्यय हैं जो क्रियाओं के अतिरिक्त संज्ञा, विशेषण आदि में जुड़ते हैं ।
- हिन्दी के अपने प्रत्यय भी काफी मात्रा में हैं। इस संदर्भ में एक विशेषण बात यह भी है कि संस्कृत से हिन्दी के विकास की प्रक्रिया में जिन क्षेत्रों में सर्वाधिक विकास हुआ है उनमें से एक क्षेत्र प्रत्ययों का भी है। ऐसे प्रत्ययों में आरी, आहट, अक्कड़ इत्यादि प्रमुख हैं।

संधि

- दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार को संधि कहते हैं। संधि एक शब्द व दूसरे शब्दांश के बीच भी हो सकती है।
  1. स्वर संधि – दो स्वरों के मिलने से होने वाली संधि स्वर संधि कहलाती है। (विद्या+आलय विद्यालय)
  2. व्यंजन संधि – व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन की संधि व्यंजन संधि कहलाती है। (जगत्+नाथ जगन्नाथ)
  3. विसर्ग संधि – विसर्ग के साथ स्वर अथवा व्यंजन की संधि विसर्ग संधि कहलाती है। (दु+शासन दुशासन)

समास

- जब दो शब्द अपनी विभक्ति को छोड़कर आवृत्त में मिल जाते हैं, तो इसे समास कहते हैं। इस प्रकार से निर्मित शब्दों को सामासिक शब्द कहते हैं।
- सामासिक शब्द को उनकी विभक्ति के साथ पुनः लिखना विग्रह कहलाता है।

अव्ययीभाव समास

- जिस समास का पहला पद प्रधान हो और अव्यय हो तथा उत्तर पद गौण हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। (यथाविधि, निडर)

तत्पुरुष समास – 32

- जिस समास का दूसरा पद प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। (घुड़सवार, हस्तलिखित)
- इस समास का पहला पद बहुधा संज्ञा या विशेषण होता है।
- तत्पुरुष समास के दो भेद हैं–
  व्याधिकरण तत्पुरुष – यही तत्पुरुष समास है। द्विगु समास इसी तत्पुरुष समास का उदाहरण है।

द्विगु समास

- वह समास जिसका पहला पद संख्यावाचक हो उसे द्विगु समास कहते हैं। (चौराहा, सतसई)
- समानाधिकरण तत्पुरुष का प्रचलित नाम कर्मधारय समास है। कर्मधारय समास का पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है। (पीतांबर, शिवदीन)
- तत्पुरुष समास के प्रकारों में एक 'नञ तत्पुरुष समास' भी होता है, जिसका पहला पद निषेधात्मक होता है। (अकर्मण्य, अनाथ)

द्वंद्व समास

- जिस समास के दोनों पद प्रधान हो अर्थात् पूर्वपद और उत्तर पद बराबर महत्व के हों, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। (गाय–बैल, दाल–भात, भूल–चूक)

ToppersNotes Unleash the topper in you

बहुब्रीहि समास

- जिस समास का कोई भी पद प्रधान नहीं होता और जो अपने–अपने पदों से भिन्न तीसरे अर्थ की व्यंजना करता है, बहुब्रीहि समास कहलाता है। (चन्द्रमौलि, चक्रपाणि, वीणापाणि)
- योगरूढ़ शब्द ही एक प्रकार से बहुब्रीहि समास कहलाते हैं।

मानक हिन्दी की व्याकरण संरचना

- किसी भाषा में निहित व्यवस्था उसके व्याकरण पर निर्भर होती है । व्याकरण का अध्ययन चार भागों में बाँटकर किया जाता है–
  1. पद संरचना
  2. कारक व्यवस्था
  3. विकारोत्पादक तत्त्व
  4. वाक्य संरचना

पद संरचना

- शब्द और पद प्रायः सामानार्थक शब्द हैं। इसमें अंतर यह है कि व्याकरण की व्यवस्था से युक्त होने पर शब्द को 'पद' कहा जाता है।
- पद के दो प्रकार हैं –
  1. विकारी
  2. अविकारी
- विकारी पदों में चार चीजें शामिल हैं –
  1. संज्ञा
  2. सर्वनाम
  3. विशेषण
  4. क्रिया

संज्ञा

- किसी भी व्यक्ति, वस्तु, भाव, विचार, द्रव्य, समूह आदि के नाम को व्यक्त करने वाला पद संज्ञा कहलाता है।
- संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं –
  1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
  2. जातिवाचक संज्ञा
  3. भाववाचक संज्ञा
- कुछ विद्वान इसके अतिरिक्त दो भेद और मानते हैं–
  1. द्रव्यवाचक संज्ञा
  2. समूहवाचक संज्ञा
- लेकिन अब इसे स्वतंत्र संज्ञा का भेद न मानकर इसे जातिवाचक संज्ञा का उपभेद मानते हैं ।

व्यक्तिवाचक संज्ञा

- जिस संज्ञा से किसी खास व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी आदि के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं, यथा– राम, सीता, बिहार, दिल्ली, चेतक आदि।

जातिवाचक संज्ञा

- जिस संज्ञा से किसी वर्ग विशेष का बोध होता हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं, यथा– मनुष्य, पशु, पक्षी आदि।
  1. **द्रव्यवाचक संज्ञा** – जब कोई संज्ञा द्रव्य पदार्थ का बोध करवाती है उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं जैसे– पानी, तेल, दूध आदि।
  2. **समूहवाचक संज्ञा** – जब कोई शब्द किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी आदि के समूह का बोध करवाए तो उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं, यथा– सेना, विद्यार्थी, पुलिस आदि।
  3. **भाववाचक संज्ञा** – जिस शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु के स्वभाव, गुण या स्थिति का पता चलता है, भाववाचक संज्ञा कहलाता है । यथा– प्रेम, विनम्रता, मानवता, बुढ़ापा आदि।

सर्वनाम

- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं, यथा– मैं, वह, तुम आदि।
- सर्वनाम के छः भेद हैं–

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम** – हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में तीन पुरुष स्वीकार किए गए हैं। इन तीनों के लिए हिन्दी में निम्नलिखित सर्वनाम प्रचलित हैं –

पुरुष	एक वचन	बहुवचन
उत्तम	मैं	हम
मध्यम पुरुष	तू	तुम
अन्य पुरुष	वह	वे

2. **निजवाचक सर्वनाम –** जो सर्वनाम उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष या अन्य पुरुष के संबंध में अपनेपन का बोध करवाते हैं, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे– 'यह मेरा अपना काम' है।
3. **निष्चयवाचक सर्वनाम** – ये सर्वनाम किसी संज्ञा की निश्चयात्मकता को व्यक्त करते हैं। ये प्रायः अकारांत होते हैं, परंतु, इसमें प्रायः ईकारांत होने की गहरी प्रवृत्ति होती है। जैसे– यही, वही, यहीं, वहीं इत्यादि।

4. **अनिष्चयात्मक सर्वनाम** – ये सर्वनाम संज्ञा पद की अनिश्चितता को व्यक्त करते हैं, जैसे– कोई है, वाक्य में 'कोई' पद।
5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम –** वे सर्वनाम है जो किसी वस्तु या व्यक्ति के संबंध में प्रश्नवाचक को व्यक्त करते हैं, जैसे – राम कहाँ गया?, कहाँ, प्रश्नवाचक सर्वनाम है।
6. **संबंधवाचक सर्वनाम –** इस सर्वनाम का प्रयोग प्रायः मिश्र वाक्यों में होता है, जहाँ एक से अधिक वाक्यों के संबंध जोड़ने के लिए इसकी आवश्यकता पड़ती है। जैसे– जो, वह, संबंधवाचक सर्वनाम हैं।

विशेषण

- जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, विशेषण कहलाता है, जैसे– काला, पीला, नाटा आदि।
- हिन्दी व्याकरण में चार प्रकार के विशेषण स्वीकृत हैं–
  1. गुणवाचक विशेषण – जो विशेषण संज्ञा के गुणों का बोध कराते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे– मोटा, पतला, बुरा, पुराना आदि।
  2. सार्वनामिक विशेषण – वे विशेषण जो अपने सार्वनामिक रूप से ही संज्ञा की विशेषता बताते हैं, सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं । जैसे– कितने लम्बे हो तुम, तुम्हारी स्थिति कैसी है आदि
     - (i) निश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण – वह किताब दो ।
     - (ii) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण – 'कोई' किताब दो।
     - (iii) प्रश्नवाचक सार्वनामिक विशेषण – 'कौन सी' किताब चाहिए ?
     - (iv) संबंधवाचक सार्वनामिक विशेषण – जो कल 'माँगी थी' 'वही' दो।

परिमाणबोधक विशेषण

- ये विशेषण प्रायः तब आते हैं जब विशेष्य के रूप में कोई द्रव्यवाचक संज्ञा हो।
- ये भी दो प्रकार के होते हैं–

1. निश्चय परिमाणबोधक– एक मीटर कपड़ा दो।
2. अनिश्चित परिमाणबोधक– थोड़ा पानी पिलाओ।
3. संख्यावाचक विशेषण – यह विशेषण भी लगभग परिमाणबोधक विशेषण के समान है, किन्तु जब आता है तब विशेष्य के रूप में कोई जातिवाचक संज्ञा हो। यह भी दो प्रकार का होता है –
   - (i) निश्चित संख्यावाचक– बीस राक्षस आए थे।
   - (ii) अनिश्चित संख्यावाचक– कुछ राक्षस आए थे।

विकारी तथा अविकारी विशेषण

विशेषण के इस चारों प्रकारों में से पहले दो प्रकार के विशेषण विकारी हैं, जबकि अंतिम दो अविकारी।

- हिन्दी की विशेषण व्यवस्था की कुछ और विषेशताएँ–
- विशेषणों के दो भेद 'उद्देश्य विषेशण' व 'विधेय विशेषण' भी किए जाते हैं। यदि विशेषण विशेष्य से पूर्व आता है तो उद्देश्य विशेषण कहलाता है। जैसे– वह 'काला' लड़का है।
- कभी–कभी कुछ विशेषण, विशेषण की ही विशेषता बताते हैं, ऐसे विशेषण को 'प्रविशेषण' कहते हैं, उदाहरण के लिए 'वह बहुत चालाक है' में 'चालाक' विशेषण व 'बहुत' प्रविशेषण है।
- कहीं–कहीं विशेषण का प्रयोग संज्ञा के रूप में किया जाता है, उदाहरण के लिए– 'उस लम्बू को देखो' व 'बड़ों की बात माननी चाहिए' वाक्यों में 'लम्बू' व 'बड़ों' का संज्ञावत् प्रयोग किया गया है।
- हिन्दी में कुछ विशेषण तो मूलतः विशेषण शब्द ही है, जैसे– सुन्दर, काला, मोटा आदि । शेष विशेषण संज्ञा, सर्वनाम व क्रिया से निर्मित होते हैं। उदाहरण के लिए –

  संज्ञा से विशेषण– बनारस से बनारसी

  सर्वनाम से विशेषण– मैं से मेरा

  क्रिया से विशेषण– खाना से खाऊ, लड़ना से लड़ाकू